समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना

प्रधान सम्पादक : डॉ० दयानंद सालुंके

विनय प्रकाशन, कानपुर

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-89187-51-4

पुस्तक : समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना
संपादक : डॉ. दयानंद सालुंके
कॉपीराइट : संपादकाधीन
प्रकाशक : विनय प्रकाशन
3ए/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903
vinayprakashankanpur@gmail.com
www.vinayprakashan.com
संस्करण : प्रथम, 2017
शब्द सज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर
जिल्दसाज : तबारकअली, कानपुर
मूल्य : 500.00 रुपये

Samkaleen Hindi Sahitya Me Nari Samwedana
Edited By : Dr. Dayanand Salunke
Price : Rs. Five Hundred Only.

Scanned by CamScanner

93. समकालीन हिंदी कविता में स्त्रीवादी प्रवृत्तियाँ 421 - 422
पी. सोमराजु

94. समकालीन कथेतर साहित्य में नारी संवेदना 423 - 425
डॉ. तलवार रामकृष्ण

95. नब्बे की बाद की कहानियों में स्त्री 426 - 431
कनकलता ओ.

96. मधु कांकरिया रचित 'सलाम आखिरी'
उपन्यास में नारी संवेदना 432 - 435
देवकी प्रसन्ना.जी.एस.

97. भारतीयता में स्त्री पक्ष : 'इला' और
'नेपथ्यराग' के संदर्भ में 436 - 438
रम्या रामकृष्णन

98. मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में नारी संवेदना 439 - 442
जे. कृष्णवेणी

99. नंगा सत्य नाटक में अभिव्यक्त नारी संघर्ष 443 - 445
गीता गुरय्या मठ

100. पारिस्थितिक स्त्रीवाद के संदर्भ में 'कनुप्रिया' 446 - 448
कविता कमलासनन

101. सुशीला टाकभौरे की कविता में स्त्री 449 - 454
डॉ. मीनाक्षी.वी. पाटिल

102. हिंदी उपन्यास और कहानी साहित्य में नारी की संवेदना 455 - 458
ममता. पी. राजपुरोहीत

103. मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी 459 - 461
डॉ. समिउल्ला साब.

104. कमल कुमार के कथा साहित्य में नारी विमर्श 462 - 464
डॉ. ममता एच. शिरगंबी

Scanned by CamScanner

सुशीला टाकभौरे की कविता में स्त्री

डॉ. मीनाक्षी. बी. पाटिल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलतः क्रियाः।।

कहा जाता है कि समाज में या जहाँ स्त्री जाति का आदर सम्मान होता है, उनकी आवश्यकतों, अपेक्षओं, आकांक्षाओं की पूर्ति होती है, उस स्थान, समाज तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहाँ स्त्री का तिरस्कार किया जाता है, वहाँ देवताओं की कृपा नहीं रहती है और वहाँ सम्पन्न किये गये कार्य भी सफल नहीं होते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि समाज सदियों से स्त्री के प्रति आदर और सम्मान की बात करता आ रहा है, तो २१ वीं सदी में 'स्त्री विमर्श' ने क्यों जन्म लिया स्त्रियों को अपने अधिकार की, स्वतंत्रता की लड़ाई क्यों लड़नी पड़ी? आज स्त्री विमर्श के द्वारा स्त्रियों को केन्द्र में लाने का प्रयास क्यों किया जा रहा है? आदि। और इन प्रश्नों का उत्तर एक ही हो सकता है 'स्त्री विश्व की सर्वप्रथम दलित' है।

स्त्री विमर्श में आज समाज में स्त्रियों को नये दृष्टिकोणों से देखने के लिए प्रेरित किया है। पितृसत्तात्मक समाज में जहाँ सवर्ण स्त्रियों को प्रताडित होना पड़ रहा हैं तो वर्णव्यवस्था के कारण दलित समाज की स्त्रियों की स्थिति और कितनी शोषणीय हो सकती है। जातिवाद के विरोध में हर समय अपने यहाँ लड़ाई लड़ी गई है। सर्वप्रथम ५६३ ई. पू. में गौतम बुद्ध ने यह लड़ाई लड़ी। १२ वीं शताब्दी ने बसवेश्वर ने। १८ वीं शताब्दी में ज्योतिबा फूले ने और १६ वीं शताब्दी में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने। वास्तव में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ही दलित साहित्य के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने रहे हैं। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर ही दलित साहित्य की रचना की जाने लगी। दलित साहित्या दलितों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक संदर्भो के अंतर्गत अन्याय, विषमता, अत्याचार, दमन, यातना, शोषण, अमानवीयता के अछूते पहलुओं को दस्तक देते हुए दलित समाज के संघर्ष तथा विद्रोह को उभारता है।

हिन्दी साहित्य में दलित कविताओ का आंरभ आधुनिक काल से माना जा सकता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका में 'हीराडोम' नाम

Scanned by CamScanner

की भोजपुरी कविता 'अछूत की शिकायत' नाम से छपी थी। यह हिन्दी में प्रथम दलित कविता मानी जाती है। तत् पश्चात हिन्दी के कुछ कवियों ने अपनी कविता में दलित चेतना को व्यक्त करने का प्रयास किया। २१-वीं सदी के दौर में दलितों के जीवन संघर्ष, चेतना और परिवर्तन को लेकर कविताएँ लिखी जा रही है। इन कविताओं में दलितों का संघर्ष, आंदोलन, अज्ञानता, पीड़ा, व्यथा आदि का चित्रण किया जा रहा है।

स्त्री सवर्ण हो या दलित वह केवल 'अन्या' है। वह पुरुष के लिए मात्र भोग की वस्तु है। सिमोन द बोउवार स्त्री: उपेक्षिता में लिखित है कि "वह अनिवार्यतः पुरुष के भोग की वस्तु है और इसके अलावा कुछ भी नहीं।"¹ (स्त्री उपेक्षिता पृ.सं–२३) स्त्री केवल सेवा के लिए ही बनी हुई है। स्त्री अमीर हो या गरीब, श्वेत हो या श्याम तन की उसे अपनी लड़ाई स्वंय लड़नी होगी। समाज में स्त्रियों की स्थिति ही दलितों की सी रही हो तो दलित स्त्रियों की स्थिति कैसी रही होगी? दलित स्त्रियों को तो दोहरे अभिशाप से गुजरना पड़ता है। प्रथमतः स्त्री होने के कारण दूसरा वह दलित स्त्री होने के कारण। दलित महिला रचनाकारों ने दलित वर्ग के भीतर व्याप्त लिंग आधारित अंतर्विरोध को गहराई से अनुभव किया और उन्हें बेझिझक होकर अभिव्यक्त भी किया है।

हिन्दी के दलित साहित्य में जिन्हें दलित महिला रचनाकारों ने दलित और स्त्री अस्मिता के लिए जमीन तैयार की। उसमें सुशीला टाकभौरे का नाम उल्लेखनीय है। वे लंबे समय से लेखन कार्य में कार्यरत रही है। उन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, कई आलोचनात्मक लेख लिखे हैं। सुशीला टाकभौरे जी के कविता संग्रह हैं– 'स्वाती बूँद और खरे मोती' (१९९२), 'यह तुम भी जानों'(१९९४), 'तुमने उसे कब पहचाना'(१९९५), 'हमारे हिस्से का सूरज'(२००५)। दलित स्त्री प्रश्नों पर केंद्रित इन रचनाओं में सफाई कर्मियों की यातना, समस्या, दलित समाज की सुप्त चेतना, शोषण, दमन, उत्पीड़न, दलित स्त्रियों की प्रताड़ना, संघर्ष आदि का सजीव चित्रण मिलता है।

स्त्री चेतना को अभिव्यक्त करते हुए ' मासूम भोली लड़की' कविता लिखती है कि–

"भीड़ से अलग / अपनी पहचान बनानी है
तुम्हें जूझना है
आकाश को घूमना है
इसलिए अपने से अलग
रख दिया है मैनें तुम्हें
ताक पर"

सवर्ण स्त्रियों की भांति दलित स्त्रियाँ भी पितृसत्ता का दंश ही झेलती है। वैसे भी समाज में प्रत्येक स्त्री की दशा से गई गुजरी रही है, तो दलित स्त्रियों की क्या दशा रही होगी यह हमें सोचने पर मजबूर करती है। पितृसत्ता को झेल रही इन स्त्रियों में चेतना उत्पन्न कर स्त्रियों को अपनी स्वतंत्र छवि को बनाने के लिए कहती है। इसके साथ ही यह सुझाव भी देती है कि यह स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना होगा।

विश्व की संपूर्ण स्त्रियाँ पितृसत्तात्मकता की शिकार बनी हुई है। सदियों को किस्सागोई का पाठ पढ़ाकर उसे पुरुष स्वतंत्रता में जकड़ दिया गया है। स्त्री सदियों से ठगी जा रही है। स्त्री : उपेक्षिता में सिमोन द बोउवार लिखती है कि "औरत को औरत होना सिखाया जाता है। औरत बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है।"² (पृ. सं–२१) सुशीला टाकभौरे ने स्त्रियों से ऐसे बंधनों को तोड़ने लिए आग्रह किया है। वे 'आज की खुद्दार औरत ' कविता में लिखती हैं–

"पिंजरे में बंद मैना को
किस्सागोई पाठ पढ़ाते रहे
लाज–शर्म का हिसाब लगाते रहें
तालबन्दी का एक हक जताते रहे

जो तुमने पाया वह
तुम्हारा सामर्थ्य
नारी ने स्वंय कुछ किया
तो बेहयाई
अब बताओ
तुम्हें क्यों शर्म नहीं आयी?
गल चुकीं
बहुत मोमबत्तियाँ
आज
वह जंगल की आग है
बुझाए न बुझेगी
बन जायेगी
आग की दरिया।"

स्त्रियाँ सदियों से ठगी जा रही है। उसन कुछ स्वतंत्रता प्राप्त की भी है तो उतनी ही जितना उसे पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए देना चाहा है। लेकिन आज प्रत्येक स्त्री ऐसे बंधनों से मुक्त होना चाहती है। स्त्री मुक्ति पर : उपेक्षिता में सिमोन द बोउवार लिखती हैं– " वह सदियों से ठगी गई है। यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल भी की है, तो उतनी ही, जितनी कि पुरुष ने अपनी सुविधा के

Scanned by CamScanner

लिए देना चाहा। और सीमोन द मुक्ति–संदेश सब आधी दुनिया के लिए है, जो स्त्री कहलाती है।''३ (पृ. सं–१८) लेखिका स्त्रियों की तुलना गली मोमबत्ति से करते हुए कहती है। कि स्त्रियों में स्त्री मुक्ति की ज्वाला जंगल की आग की तरह फैल रही है। उसे बुझाने का प्रयत्न करेंगे तो भी वह आग नहीं बुझेगी।

सदियों से स्त्री अभिनस्त रही है इसी अधीनस्थता के कारण स्त्रियों पर सदियो से हो रहे शोषण का वह खुलकर विरोध कर रही है। सीता, दौपदियों ने अगर प्राचीन काल से ही स्त्री पराधीनता, शोषण, वंचना, प्रताड़ना आदि का विरोध करते तो आज हमे स्त्री विमर्श या 'दलित स्त्री विमर्श' पर आवाज उठाने की आवश्यकता नहीं होती। 'पीड़ा की फसलें' कविता में लिखते हैं–

''संवेदना दिखाना बन्द करो
तुम्ही ने तो सीता को
धरती में समाजाने को मजबूर कर दिया था
तब से
विश्वास, भक्ति और प्रेम से पगी सीता
बार–बार
धरती में दफनाई जाती रही है
इसलिए
पीड़ा की फसलें
उगती रही हैं।''

स्त्री विमर्श पर विचार अभिव्यक्त कर रहे उन लेखकों पर प्रतिहार करते हुए कहती है कि स्त्रियों के प्रति संवेदित होना बन्द करो। क्योंकि तुम्हीं ने सीता को बार–बार धरती में दफनाया है। तुम्हारे ही कारण समाज में स्त्रियों को बार–बार प्रतिहार होना पड़ रहा है।

जब स्त्री पराधीन थी तब वह दुनिया को पुरुष के चश्में से देखता था। लेकिन अब उसने दुनिया को अपने दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। उसमें चेतना जागृत होने लगती है। इसलिए लेखिका 'मासूम भोली लड़की' में लिखती हैं कि –

''वह देखना चाहेगी
आसमान, पक्षी पतंग
उड़ान चाहेगी दूर बहुत दूर
दुनिया को अपनी नजर से देखेगी।''

इसलिए यह 'गाली' कविता में समाज से प्रश्न करती है कि स्त्री को एक गाली क्यों बना दिया गया है। लेखिका लिखती हैं कि –

''कुत्ता और कुतिया एक दूसरे के पूरक हैं
चरित्र के नाम
कुत्ता वफादार
और
'कुतिया' और क्यों बन जाती है।''

पुरुष प्रधान समाज में पुरुष को स्त्री का होना विद्वेष की बात है। सीमोन द बोउवार के प्रति पुरुष की मानसिकता को व्यक्त करती हुई लिखती है कि ''औरत का होना पुरुष के लिए विद्वेषपूर्ण स्थिति है।''४ (पृ. सं–३१) स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक रहे हैं तो स्त्री को समानता की दृष्टि से क्यों देखा जाता? स्त्री को गाली क्यों समझी जाती है? जबकि आज स्त्रियों में परिवर्तन लाने की क्षमता है। पुरुष रुपी हिंसक जंतुओं से लड़ने की क्षमता भी आज उसने प्राप्त किया है।

'लेकिन कब तक' कविता में स्त्री शोषण तथा संघर्ष को दर्शाते हुए पितृसत्तात्मक समाज से स्त्री मुक्ति की आवाज उठाई जा रही है। अब तक समाज ने स्त्रियों को अपना गुलाम बना दिया था। लेकिन आधुनिक समाज इस गुलामी से मुक्त होने कं लिए ज्वाला मुखी बनने के लिए भी तैयार है। स्त्री की गुलामी पर सीमोन द बोउवर लिखती है कि '' नारी को गुलाम बनाने में सफ[...] होकर पुरुष ने नारी को उन गुणों से वंचित कर दिया, जो उसे अधिक वांछि[...] बना सकते हैं। समाज और परिवार के बंधनों के बीच नारी की मोहिनी–शक्ति न[...] हो गई, वह बढ़ी नहीं। वह दासस्वरुप बन गई।''५ (पृ. सं–१०३) आज की स्[...] ऐसी दासता को जड़ों से उखाड़ फेकना चाहती है। लेखिका लिखती है [...]

मन की चट्टान पर
जब भी चोट पड़ती है
सब ओर
एक आग सी फैल जाती है
धुंधआती अधजली आग
ज्वालामुखी होकर
धरती– सौ फूट करती है
लोग भूकम्प की बात को
सहज मानते हैं
स्त्री ज्वाला – मुखी हो सकती है
यह भी तो सहज बात है।''

लेखिका ने दोहरे अभिशाप से अभिव्यक्त दलित स्त्रियों के प्रति [...] खड़े होकर पुरुषों को अगाह करने की चेष्टा की है कि स्त्रीयों [...] पीड़ा, वेदना, आदि को झेल लिया है। लेकिन और अब नहीं। [...] स्त्री शोषण के विरुद्ध ज्वाला–मुखी भी बन सकती है।

Scanned by CamScanner

स्त्री मुक्ति, स्त्री शोषण पर आवाज अगर उठा रहे हैं तो समाज से लड़ने की क्षमता होनी चाहिए। इसके लिए हमारे अंदर आत्मविश्वास का होना आवश्यक है। इसलिए समाज से पिछड़े, दमित, पीड़ित दलित स्त्रियों में आत्मविश्वास भरते हुए लिखती है कि

"दिखाना चाहती हूँ
लड़की। तुम किसी पर निर्भर नहीं
स्वयं पूर्ण हो
तुम मुझसे अलग नहीं
पर तुम्हारा अस्तित्व है
तुम्हारी राह, तुम्हारी मंजिल
मुझसे बहुत आगे है"

आत्मविश्वास को उत्पन्न करते हुए अन्यों को प्रेरणा देती है। वह लिखती है कि

"वह बदलेगी अब
सदियों की परिपाटी
नहीं हारेगी कभी
नहीं हारेगी।"

दलितों पर हो रहे अन्याय, शोषण, दमन आदि का जो परिपाटि सदियों से चलती आ रही है उसका अंत शीर्घ ही होगा। क्योंकि तुम (दलित स्त्रियों से कहती है) थककर, हारकर चुप बैठनेवालों में से नहीं हो। तुम समाज में व्यापत जातिव्यवस्था का विरोध करोगी। जातिव्यवस्था के इतिहास को नये सलीके से नये पृष्ठों पर लिखने का प्रयास करोगी।

सुशीला टाकभौरें की इन कविताओं से प्रतीत होता है कि लेखिका न जीवन की विड़म्बनात्मक स्थितियों को, उनकी पीड़ा, संघर्ष, संवेदना आदि को अत्यंत मार्मिकता से किया है। ऐसी कविताओं से कहीं न कहीं स्वयं को पहचानकर स्वंय को तराशने के लिये सहायता मिलती है। लेखिका ने दलित समाज तथा दलित महिलाओं के लिए चुनौति बन कर खड़े रहें पितृसत्तात्मक, जातिवाद, निरक्षरता, तंगहाली, अस्पृश्यता आदि का चित्रण किया है। इन कविताओं के माध्यम से महिलाओं को परिस्थिति से लड़ने के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न कराने का प्रयास कराती हैं।

डॉ. मीनाक्षी.बी. पाटिल
हिन्दी विभाग
बसवेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय
बसवन बागेवाडी– ५८६२०३

Scanned by CamScanner